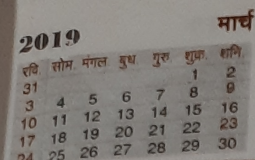

डॉ० कविता कुमारी सिंह
हिन्दी - विभाग, आर० एन० कॉलेज

P.G, Sem II

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग

आधुनिक काल के द्वितीय युग - द्विवेदी युग का विस्तार संवत् 1950 से 1975 तक माना गया है। द्विवेदी युग राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरूप गठन, उसके परिमार्जन तथा समाज सुधार आदि की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता है। आधुनिक युग की हिन्दी कविता का आविर्भाव तो भारतेन्दु युग से हुआ परन्तु उसका विकास द्विवेदी युग से शुरू हुआ। इसी युग में खड़ी बोली काव्य - भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई

और उसका परिमार्जन हुआ। द्विवेदीयुगीन काव्यधारा जहाँ अपने युग की परिस्थितियों की देन है वहीं यह रीतिकालीन शृंगारपरक कविता की प्रतिक्रिया के रूप में भी प्रकट हुई थी। रीतिकालीन कवियों का सिद्धान्त था। जिसका खाना उसका गाना, जबकि द्विवेदीयुगीन कविता में स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति की कमी थी। इस युग की कविता राष्ट्रीय - भावना एवं आदर्श के अनुरूप है और कवियों का दृष्टिकोण नीतिपरक है। द्विवेदी युग की कविता में राष्ट्रप्रेम, बुद्धिवाद और मानवतावाद को विशेष महत्व दिया गया है।

प्रत्येक युग का साहित्य अपने समय की परिस्थितियों और सम्पर्कों से

प्रभावित तथा प्रेरित हुआ करता है। किसी भी नयी काव्य-धारा का उदय सहसा नहीं हुआ करता। द्विवेदीयुग का आविर्भाव भी किसी निश्चित सन् या संवत् से नहीं हुआ। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से भले ही काव्यधारा विशेष की कालावधि मान ली अन्यथा काव्य और साहित्य के क्षेत्र में होने वाला परिवर्तन भी युग के साथ-साथ शनैः शनैः होता चला करता है।

द्विवेदीयुगीन साहित्य रीतिकालीन श्रृंगारपरक काव्य की प्रतिक्रिया के रूप में आविर्भूत हुआ। इस युग की साहित्यिक अनेकरूपता के बारे में डॉ श्रीकृष्ण लाल ने लिखा है, "पच्चीस वर्षों में ही एक अद्भुत परिवर्तन हो गया। मुक्तकों के स्थान पर महाकाव्य, आख्यानकाव्य, प्रेमाख्यानक काव्य,

प्रबंधकाव्य, गीतिकाव्य और गीतों से सुसज्जित काव्योपवन का निर्माण होने लगा। गद्य में घटना-प्रधान, चरित्र-प्रधान, भावप्रधान, ऐतिहासिक तथा पौराणिक उपन्यास और कहानियों की रचना हुई। समालोचना और निबन्धों की अपूर्व उन्नति हुई।" द्विवेदीयुगीन साहित्यिक स्थिति के बारे में आलोचक प्रकाशचन्द्र गुप्त ने लिखा है कि "द्विवेदीयुग तैयारी का युग था। भारतेन्दु जी ने भूमि गोड़ी और बीज वपन किया। द्विवेदी युग में अनेक तरुलताओं से उपवन लहलहाने लगा था।"

द्विवेदीयुगीन साहित्यकारों को गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय देने का अनुकूल वातावरण प्राप्त था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक मार्गदर्शन से कविता

क्षेत्र में पुनः परिवर्तन हुआ। यह परिवर्तन बहुत व्यापक था। द्विवेदी जी का 'सरस्वती पत्रिका' का सम्पादन करना आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है। द्विवेदी जी के व्यक्तित्व का तत्कालीन साहित्यकारों और साहित्यिक प्रवृत्तियों पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उस युग का नाम ही द्विवेदी युग पड़ गया।

काव्य में राष्ट्रीय भावना का स्वर — द्विवेदी युग की कविता राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है। इस युग में देश की स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन की तैयारी हो रही थी। द्विवेदीयुगीन कविता का प्रमुख विषय राष्ट्रीय आन्दोलन है। देश के प्राचीन गौरव का

स्मरण कराकर अपनी संस्कृति का गुणगान कर इस युग के कवियों ने जनता में देशप्रेम, राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया। उन्होंने देश की वर्तमान शोचनीय दशा का चित्र प्रस्तुत कर जनता के मन में देश के उत्थान की भावना जगानी चाही। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' इस दृष्टि से बेजोड़ कृति है। राष्ट्रीयता की जो तान भारतेन्दु जी ने छेड़ी थी, उसका स्वर गुप्त जी में बड़ा ऊँचा हो जाता है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने 'जन्म-भूमि' कविता में देश प्रेम का भाव व्यक्त करते हुए लिखा है :—

'जग में जन्मभूमि सुखदायी, जिस नर पशु के मन न समायी।
उसके मुख दर्शन नर-नारी, होत हैं अघ के अधिकारी॥

डॉ॰ इकबाल ने भारत की प्रशंसा में बड़े सुन्दर शब्दों में लिखा है ;—

'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं उसकी यह गुलिस्ताँ हमारा॥

मानवतावादी विचारधारा :—

द्विवेदी युग से पूर्व रीतिकाल या भक्तिकाल में मनुष्य को मनुष्य के रूप में नहीं देखा जा सका। रीतिकालीन कवियों को

~~नर-नारी~~ नर-नारी नायक-नायिका रूप थे। द्विवेदीयुग के कवियों ने उच्च वर्गीय व्यक्तित्व के बजाय निम्नवर्ग को काव्य का विषय बनाया। डॉ॰ रवीन्द्र सहाय वर्मा ने लिखा है— "मनुष्य के प्रति रीतिकालीन कवियों का दृष्टिकोण बहुत ही संकीर्ण था। उनके लिए समस्त पुरुष नायक थे और स्त्रियाँ नायिकाएँ। — किन्तु द्विवेदीयुग में प्रथम बार मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखा गया और श्रृंगारिकता एवं धार्मिकता की संकीर्ण कारा में दीर्घकाल से वन्दिनी मानवता को मुक्त करने का प्रयास किया गया।"

इस युग के कवियों ने मानव की सेवा को ईश्वर सेवा बताकर

मानवीय गुणों को अपनाने की प्रेरणा दी है। गुप्त जी ने राम को 'साकेत' में आदर्श मानव-रूप चित्रित किया है। उनके राम मानव में 'ईश्वरता' की स्थापना करना चाहते हैं —

"नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

हरिऔध जी के 'प्रिय-प्रवास' महाकाव्य में भी मानवसेवा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। 'प्रिय-प्रवास' की राधा और कृष्ण मानव सेवा करते दिखाई पड़ते हैं। गुप्त जी की 'पंचवटी' में लक्ष्मण मनुष्यता को देवत्व का आधार बताते हैं —

"मैं मनुष्यता को सुरत्व की जननी
भी कह सकता हूँ।"

द्विवेदीयुगीन कवियों में धार्मिकता भारतेन्दुयुगीन धार्मिकता से ऊँचे दर्जे की है। इस युग के कवियों की दृष्टि अधिक उदार और व्यापक है।

बौद्धिकता —

द्विवेदीयुगीन कविता में बुद्धिवाद की प्रधानता है। अंग्रेजों की सभ्यता, शिक्षा तथा वैज्ञानिक अनुसन्धानों के प्रभाव से इस युग के कवियों ने अपने देश के धर्म सामाजिक रीतियों आदि का बुद्धिवाद के आलोक में ~~पुर्न~~ पुनर्मूल्यांकन

किया है। अवतारों को भी मानवरूप में वर्णित किया गया। पौराणिक मान्यताओं की तर्कसंगत व्याख्या प्रस्तुत की गई। गुप्त और हरिऔध ने क्रमशः साकेत और प्रियप्रवास में बुद्धिवाद को बड़ा सहारा लिया है। इस युग के कवि नर को ही नारायणत्व प्रदान करना चाहते हैं। वे जाति एवं पद के आधार पर मनुष्य को बड़प्पन प्रदान करने के बजाय कर्म को बड़प्पन का आधार मानते हैं। इनका प्रयत्न मनुष्यों को आदर्श सिखाने का रहा है। गुप्त जी ने राम से कहलवाया है:

'मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन सम्मुख धन को तुच्छ बताने आया।'